



9 डॉक्टरों की हड़ताल के कारण इमरजेंसी सेवाओं को छोड़कर ओपीडी रही बंद परेशान हुए मरीज



10 वार्डवाइज मतदाता सूची को लेकर विवाद अन्य वार्डों में वोट शिफ्ट करने के लगे आरोप



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस विशेषांक

नारी शक्ति का उत्सव है अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

नारी जीवन सृजन और शक्ति की देवी

महिलाओं के सम्मान के लिए घोषित इस दिन का उद्देश्य सिर्फ उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान बताना है। एक महिला के बिना किसी भी व्यक्ति का जीवन सृजित नहीं हो सकता है। भारत में भी आधी आबादी के इस दिवस को धूम-धाम से सेलिब्रेट किया जाता है। यह दिन महिलाओं को उनकी क्षमता, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक तरक्की दिलाने व उन महिलाओं को याद करने का दिन है। देश में महिलाओं को शिक्षा का, वोट देने का और मौलिक अधिकार प्राप्त है। भारत में मां दुर्गा और काली की पूजा होती है, इसलिए हमारे देश में नारी को देवी भी कहा गया है।



शारदा यादव
निदेशक, सनग्लो
इंटरनेशनल स्कूल



डॉ. दीपिका यादव
MBBS, MD MEDICINE,
DM CLINICAL HAEMATOLOGY
(AIIMS NEW DELHI)



डॉ. सुरेखा यादव
M.B.B.S., D.G.O., D.N.B. Obs.
& Gynaecology Specialist

दुनिया की आधी आबादी अपने सुनहरे भविष्य की राह पर है। सदियों तक पदों में रहा चेहरा जिसके सपने कभी आंखों में ही दम तोड़ देते थे अब हकीकत की रोशनी में साकार होने लगे हैं। समाज बदल रहा है सोच बदल रही है और बदलाव आ रहा है नारी के अस्तित्व से जुड़ी मानसिकता में किसी समय मात्र पुरुष की परछाईं मानी जानी वाली महिला को इंसान का दर्जा मिल रहा है। समय की धुरी में 21 वीं सदी का समाज आज नारी के अस्तित्व को खुले तौर पर स्वीकार कर रहा है। यह बदलाव मेट्रो शहरों के निजी सरकारी कार्यालयों में है, स्कूल-कॉलेज में है, संसद में है और सड़कों पर है। वहीं, सबसे बड़ी बात है कि गांव की चौपालों पर भी परिवर्तन की हवा महसूस की जा सकती है। यहां न केवल महिला सरपंच है। बल्कि वह अपने फैसले भी खुद लेने लगी है। अपनी बात रखने के लिए अब उसे किसी सहारे की जरूरत नहीं है बल्कि उसकी आवाज में अब गलत का विरोध करने का दम आ रहा है। हालांकि, इसके लिए एक एक लम्बे दरिया पार किया गया है। मुश्किलें अब भी हैं पर अब मुश्किलों को दूर करने के लिए हौसलों की कमी नहीं। इसे एक लम्बे संघर्ष की

परिणीति ही कहा जा सकता है कि आखिरकार महिला ने पुरुष प्रधान समाज को खुद के अस्तित्व पर यकीन करने के लिए मजबूर कर ही दिया है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के हौसलों से भरी उसी उड़ान को हमारा सलाम जिनके जरिए उन्होंने अपने लिए बुलंदी का एक नया आसमां बनाया और जिसके सदैव महिलाओं ने आधे-अधूरे के दायरे को दरकिनार करते हुए अपनी उपलब्धियों की रोशनी से संपूर्ण ब्रह्मांड को आलोकित किया है। 8 मार्च, विश्व महिला दिवस, फिर आ गया एक दिन जो है महिलाओं का, महिलाओं के लिए और सिर्फ महिलाओं के नाम, लेकिन क्या औचित्य है इस दिन का। आखिर क्यों बनाया गया इसे सिर्फ नारियों के लिए। इसलिए न कि इस दिन हम नारियों का सम्मान कर सकें, उनको महिमा का बखान कर सकें। उन्हें यह एहसास दिला सकें कि कितनी अमूल्य हैं वे,

जो वंश को बढ़ाती है, एक ममतामई मां, एक प्यारी बेटी, बहन, सच्ची जीवनसाथी और दो परिवारों के बीच एक सेतु की तरह है। महिला की इस समाज में उतनी ही अहमियत है जितनी एक पुरुष की। हम मान लें कि हमारा समाज अब बदल चुका है और यहां औरत और आदमी का एक समान दर्जा है। महिला दिवस पर स्त्री की जो मूर्ति सामने आती है, वह है प्रेम, स्नेह व मातृत्व के साथ ही शक्तिसंपन्न स्त्री की मूर्ति। यह दिन यह गिनने का भी है कि आखिर हमने मील के कितने पत्थर पार कर लिए। सचमुच गौरव और आत्मविश्वास से कलेजा तर हो जाता है उन पाई हुई पायदानों के लिए और उन आत्मबल से भरी स्त्रियों के लिए जो सचमुच गजब की हैं। भारत में महिला दिवस व्यापक रूप से मनाया जाता है। पूरे देश में इस दिन महिलाओं को समाज में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है और समारोह आयोजित किए जाते हैं।

SUNGLOW
INTERNATIONAL SCHOOL
AFFILIATED TO CBSE CODE: 530597

Happy
International
Women's Day

ENROLL

Now

**SCHOOL
ADMISSION
2026**

- International Learning Environment
- Smart Classrooms
- Activity-Based Teaching
- Experienced Faculty
- Safe & Child-Friendly Camps

CLAT
CA FOUNDATION
CIVIL SERVICES
FOUNDATION

Brainlurn
Unleashing talent - Mentoring future

Aakash Digital
Medical/IT/JEE Foundations
For School Integrated Program (SIP)

GANGOLI, SAHARANWAS, REWARI, M. 8307840239, 9992333882
Email: sunglowrewari@gmail.com, Website: www.sunglowschool.in

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. नील कमल
पेट, आंत, लीवर अस्पताल



**BLOOD
DOCTOR**



DR. DEEPIKA YADAV
MBBS, MD MEDICINE,
DM CLINICAL
HAEMATOLOGY
(AIIMS NEW DELHI)

सभी मेजर
TPA की कैशलैश
सुविधा उपलब्ध है।

पता : बावल रोड़, नजदीक कोर्ट/जैन मन्दिर, रेवाड़ी
9350177585



Dr. Surekha Rao
(Consultant GI
Pathologist)

Dr. Sachin
(Consultant
Gastroenterologist)

Dr. Neel Kamal
(Director and
Head of
Gastroenterologists,
Hematologist)

Dr. Kamal S Yadav
Liver
Transplant Surgeon

Dr. Aamir Saif
(R.M.O)

**Blood रोग,
खून कैंसर,
कम Platelet,
Lymphoma
का उपचार**

हरियाणा सरकार के पैनल पर

सभी पेट, आंत,
लिवर, ब्लड, प्लेटलेट्स
के सम्बन्धी रोग,
रक्त कैंसर का
इलाज उपलब्ध है।

EXPERTISE IN

- HEMOGLOBINOPATHIES
- ANEMIA
- BLEEDING DISORDERS
- THROMBOTIC DISORDERS
- MALIGNANT HAEMATOLOGY
- BONE MARROW TRANSPLANT

**रेवाड़ी में पहली बार खून की बीमारी का उपचार
कमजोरी, थकान, रक्त रोग और BLOOD CANCER**

दिल्ली, गुड़गाँव, जयपुर की सभी सुविधाएं दक्षिण हरियाणा रेवाड़ी में पहली बार:

ENDOSCOPIC ULTRASOUND
पेट, आंत, लीवर, पेनक्रियाज के सभी रोगों का निदान व उपचार

FIBRO SCAN लीवर की जाँच :-
फैटी लीवर, लीवर की सूजन

MANOMETRY लम्बी कब्ज से
बिना दवाई के छूटकारा

ERCP ENDOSCOPY COLONOSCOPY LIVER DISEASE PANCREATIC DISEASES

30 से पहले समझ लें पैसे का खेल, वरना बाद में होगी मुश्किल!

कम उम्र में अपनाएं ये नियम, बने
आर्थिक रूप से मजबूत, निवेश की सही
समय पर शुरुआत ही बनाती है अमीर

बिजनेस डेस्क

कम उम्र सपनों, करियर और नई शुरुआत का समय होती है। पहली नौकरी, पहली सैलरी और अपने फैसेल लेने की आजादी — ये सब उत्साह से भरे होते हैं। लेकिन इसी दौर में पैसे को लेकर की गई छोटी-छोटी गलतियां आगे चलकर बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं। अक्सर युवा कमाई शुरू करते ही लाइफस्टाइल अपग्रेड कर लेते हैं, लेकिन बचत और निवेश को टालते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि 30 की उम्र पार करते-करते जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, मगर मजबूत फाइनेंशियल बेस नहीं बन पाता। अगर आप 30 की उम्र से पहले कुछ बुनियादी और अक्सर वित्तीय नियम समझ लें, तो भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित और तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी फाइनेंस रूल्स, जिन्हें हर युवा को अपनाना चाहिए।

1. 50/30/20 रूल: कमाई का सही बंटवारा
यह नियम बजट बनाने का सबसे आसान और कारगर तरीका माना जाता है। इसके अनुसार 50% आय जरूरी खर्चों पर (किराया, राशन, बिजली-पानी, बिल, इंश्योरेंस), 30% आय इच्छाओं पर (यूमना-फिरना, मूवी, शॉपिंग, गैजेट्स) और 20% आय बचत या निवेश में लगानी चाहिए। अगर शुरुआत से ही इस फॉर्मूले को अपनाया जाए तो खर्च नियंत्रण में रहता है और निवेश की आदत भी बनती है। कई युवा पूरी सैलरी खर्च कर देते हैं और महीने के अंत में बचत शून्य रह जाती है। 50/30/20 रूल आपको अनुशासन सिखाता है और 'पहले बचत, फिर खर्च' की सोच विकसित करता है।

2. 20/4/10 कार रूल: गाड़ी का सपना
नई कार खरीदना लगभग हर युवा का सपना होता है। लेकिन कार लोन अक्सर लंबे समय तक वित्तीय दबाव बना देता है। ऐसे में 20/4/10 रूल बहुत काम आता है। कम से कम 20% डाउन पेमेंट करें, लोन की अवधि 4 साल से ज्यादा न रखें। आपकी मासिक आय का 10% से ज्यादा इंश्योरेंस और कार खर्च पर न जाए। इस नियम का मकसद यह है कि गाड़ी आपके लिए सुविधा बने, बोझ नहीं। लंबी अवधि का लोन लेने से ब्याज ज्यादा चुकाना पड़ता है और अन्य निवेश के अवसर छूट सकता है।

3. रूल ऑफ 72: कंपाउंडिंग की ताकत समझें
निवेश की दुनिया में 'कंपाउंडिंग' सबसे बड़ा हथियार है। रूल ऑफ 72 आपको यह समझाने में मदद करता है कि आपका पैसा कितने समय में दोगुना होगा। फॉर्मूला है: 72 ÷ ब्याज दर = पैसा डबल होने का समय (सालों में)। उदाहरण के लिए, अगर आपको 12% सालाना रिटर्न मिल रहा है तो 72 ÷ 12 = 6 साल यानी आपका निवेश लगभग 6 साल में दोगुना हो सकता है। यह नियम आपको जल्दी निवेश शुरू करने की प्रेरणा देता है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, कंपाउंडिंग का फायदा उतना ज्यादा मिलेगा।

4. 3-6 महीने का इमरजेंसी फंड : सुरक्षा कवच
जिंदगी अनिश्चितताओं से भरी है। अचानक नौकरी छूट जाए, मेडिकल इमरजेंसी आ जाए या कोई पारिवारिक संकट आ जाए। ऐसे समय में कर्ज लेने की नौबत न आए, इसके लिए इमरजेंसी फंड जरूरी है। आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर रकम अलग से बचाकर रखनी चाहिए। यह रकम सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड जैसे सुरक्षित और आसानी से निकाले जा सकने वाले साधनों में होनी चाहिए। इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और निवेश को बीच में तोड़ने से बचाता है।

5. रूल ऑफ 100: उम्र के अनुसार निवेश
निवेश में रिस्क और रिटर्न का संतुलन बेहद जरूरी है। रूल ऑफ 100 एक आसान फॉर्मूला देता है। 100 - आपकी उम्र = इक्विटी में निवेश का प्रतिशत। अगर आपकी उम्र 25 साल है। 100 - 25 = 75 यानी 75% निवेश शेयर बाजार या इक्विटी में और 25% सुरक्षित साधनों (FD, बॉन्ड आदि) में रखा जा सकता है। यह नियम युवाओं को ज्यादा जोखिम लेने की अनुमति देता है, क्योंकि उनके पास समय ज्यादा होता है और बाजार की गिरावट से उबरने का मौका भी।

वर्गों जरूरी हैं ये फाइनेंस रूल्स ?
● ये आपको खर्च और बचत का संतुलन सिखाते हैं
● कर्ज के जाल से बचाते हैं
● निवेश की आदत जल्दी डालते हैं
● भविष्य के बड़े लक्ष्यों (घर, शादी, रिटायरमेंट) के लिए तैयारी करवाते हैं
● आर्थिक तनाव कम करते हैं
● 30 की उम्र के बाद जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं परिवार, बच्चों की पढ़ाई, घर का लोन, मेडिकल जरूरतें। अगर आपने 20s में मजबूत वित्तीय नींव रख ली, तो आगे का सफर आसान हो जाएगा।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर महिलाएं निवेश के फैसलों में बढ़ रही भागीदारी

अब 56% अब खुद ले रही फैसले
फाइनेंशियल प्लानिंग में गैप

निवेश में महिलाओं का आत्मविश्वास
और योजना बनाने में चुनौती बढ़ा

देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया, सर्वे
में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया

बिजनेस डेस्क

भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका तेजी से बदल रही है। अब महिलाएं केवल कमाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि निवेश से जुड़े फैसलों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। शहरी भारत में निवेश को लेकर महिलाओं का आत्मविश्वास लगातार बढ़ रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं अब अपने निवेश निर्णय खुद लेने लगी हैं। हालांकि निवेश में बढ़ती भागीदारी के बावजूद मजबूत और व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। यह तस्वीर रिपोर्ट में सामने आई है। जिसे यूजीओवी के साथ मिलकर तैयार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं में निवेश के प्रति जागरूकता और स्वतंत्रता दोनों तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन वित्तीय लक्ष्य तय करने और दीर्घकालिक योजना बनाने में अभी भी सुधार की काफी गुंजाइश है। इस अध्ययन के लिए 2025 की चौथी तिमाही में देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया। सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया, जो अपने परिवार के निवेश संबंधी फैसलों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में पुरुषों और महिलाओं की संख्या बराबर रखी गई और इसका फोकस मुख्य रूप से शहरी और अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के परिवारों पर रहा।



अब महिलाएं खुद ले रही निवेश के फैसले

रिपोर्ट की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेश के फैसलों में महिलाओं की स्वतंत्र भागीदारी तेजी से बढ़ी है। सर्वे के मुताबिक अब 56 फीसदी महिलाएं निवेश से जुड़े फैसले खुद ले रही हैं, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 44 फीसदी था। यानी तीन साल में इसमें 12 फीसदी की उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वहीं, पुरुषों में यह आंकड़ा 68 फीसदी है, जो अब भी महिलाओं से अधिक है। लेकिन महिलाओं में तेजी से बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि आगे वाले समय में यह अंतर और कम हो सकता है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि निवेश के बारे में खुद सीखने वाली महिलाओं की संख्या भी बढ़ रही है। अब करीब 16 फीसदी महिला निवेशकों ने कहा कि उन्होंने निवेश की जानकारी स्वयं हासिल की है, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 13 फीसदी था। इसके विपरीत संयुक्त रूप से निवेश निर्णय लेने वाली महिलाओं का हिस्सा 52 फीसदी से घटकर 43 फीसदी रह गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं अब आर्थिक मामलों में ज्यादा आत्मनिर्भर हो रही हैं।

मार्केट-लिंक्ड प्रोडक्ट्स में बढ़ी दिलचस्पी

महिलाएं अब पारंपरिक निवेश विकल्पों के साथ-साथ बाजार से जुड़े निवेश उत्पादों में भी सक्रिय हो रही हैं। सर्वे के मुताबिक करीब 51 फीसदी महिलाएं अब म्यूचुअल फंड और शेयरों में स्वतंत्र रूप से निवेश कर रही हैं, जबकि तीन साल पहले यह आंकड़ा 39 फीसदी था। यह बदलाव इस बात का संकेत है कि महिलाओं में जोखिम लेने की क्षमता और निवेश की समझ दोनों बढ़ रही हैं।

आत्मविश्वास ऊंचा, लेकिन फाइनेंशियल प्लानिंग कमजोर

रिपोर्ट का एक अहम निष्कर्ष यह भी है कि निवेशकों में आत्मविश्वास तो बढ़ा है, लेकिन व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। सर्वे के मुताबिक 84 फीसदी लोगों को मरोसा है कि वे निवेश के फैसले खुद लेने में सक्षम हैं। लेकिन सिर्फ 33 फीसदी निवेशकों के पास ही स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य और उन्हें हासिल करने की ठोस योजना मौजूद है।

यह भी जानें

- 32 फीसदी लोगों के पास योजना है, लेकिन कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है।
- 29 फीसदी लोगों ने लक्ष्य तय किए हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने की ठोस रणनीति नहीं है।
- 6 फीसदी के पास न लक्ष्य है और न ही कोई योजना।
- 25 से 34 वर्ष की युवा महिलाओं में ज्यादा दिखाई देता है। इस आयु वर्ग की कई महिलाएं निवेश की योजना तो बनाती हैं, लेकिन उनके लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते।

पैसे के मायने भी बदल रहे

अध्ययन दिखाता है कि शहरी भारत में पैसे को लेकर लोगों की सोच तेजी से बदल रही है। पहले जहां पैसे को मुख्य रूप से जरूरत या जीविका से जोड़ा जाता था, वहीं इसे आजादी और बेहतर जीवनशैली से जोड़ा जाने लगा है। 2022 में जहां 27 फीसदी लोग पैसे को 'आजादी' से जोड़ते थे, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 35 फीसदी हो गया है। इसके विपरीत पैसे को केवल 'जरूरत' से जोड़ने वालों की संख्या घट गई है।

घर से ज्यादा अनुभवों पर खर्च

निवेश व्यवहार में एक दिलचस्प बदलाव यह भी देखने को मिला है कि लोग पारंपरिक संपत्तियों के बजाय अनुभवों को अधिक महत्व देने लगे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 41 फीसदी महिलाएं घर खरीदने की बजाय यात्रा को प्राथमिकता दे रही हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 34 फीसदी है। 2025 में करीब 43 फीसदी लोगों ने अतिरिक्त पैसे का इस्तेमाल यात्रा पर किया, जबकि 2022 में यह हिस्सा 36 फीसदी था। वहीं, घर खरीदने को सबसे बड़ा सपना मानने वालों का प्रतिशत 36 फीसदी से घटकर 28 फीसदी रह गया है।

सलाहकारों पर मरोसा लेकिन उपयोग सीमित

- 39 फीसदी लोग वित्तीय जानकारी किसी अनजान व्यक्ति से साझा करने में असहज महसूस करते हैं।
- 35 फीसदी का मानना है कि उन्हें अन्य स्रोतों से ही पर्याप्त जानकारी मिल जाती है।
- 32 फीसदी किसी की सलाह मानने में सहज नहीं होते।
- निवेश के मामलों में परिवार और दोस्तों की भूमिका सबसे अहम बनी हुई है। 76 फीसदी निवेश संबंधी सलाह अपने सामाजिक दायरे से लेते हैं।
- निवेश से जुड़े फैसलों में सोशल मीडिया की भूमिका भी तेजी से बढ़ रही है।
- शेयर बाजार में निवेश करने वाली महिलाओं में 51 फीसदी सोशल मीडिया पर स्टॉक से जुड़े कंटेंट पर सक्रिय रूप से पोस्ट या टिप्पणी करती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 36 फीसदी है।



सैलरी और जरूरतों को समझें कितना इमरजेंसी फंड है जरूरी

तैयारी

बिजनेस डेस्क

आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है: आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड ?

इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही ?

- अगर आप: सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, इंश्योरेंस या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड परिवार वालों के लिए जरूरी

- यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। मान लीजिए आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या इंश्योरेंस, बच्चों की स्कूल फीस, राशन और धरतू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड अस्थिर आय वालों के लिए

- अगर आप: फ्रीलान्सर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं। तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनिश्चित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। यह आपको लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही ?

- बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश राशि भी कम हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें ?

- सेविंग अकाउंट सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
- शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
- स्वीप-इन एफडी यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि खत: एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक बेंक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है। ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं ?

- हर महीने सैलरी का 10-20% अलग रखें
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें

लक्ष्य तय करें व ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें
धीरे-धीरे 6-12 महीनों में आपका फंड तैयार हो सकता है।
जीवन की पहली सुरक्षा परत
इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन की पहली सुरक्षा परत है। निवेश से पहले इसे प्राथमिकता देना चाहिए। आपकी सैलरी, नौकरी की स्थिरता और पारिवारिक जिम्मेदारियां तय करती हैं कि आपको 3, 6 या 12 महीने का फंड रखना चाहिए।
सही योजना के साथ बनाया गया इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और किसी भी आर्थिक संकट में मजबूती से खड़ा रहता है। यह खर्च सुरक्षा पहलू, निवेश बाद में।

पैसे को सही दिशा देना बेहद जरूरी

बिजनेस डेस्क। आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है: आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड ? : इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही ?
अगर आप: सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, इंश्योरेंस या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका

मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड : परिवार वालों के लिए जरूरी

यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या इंश्योरेंस, स्कूल फीस, राशन और धरतू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड : अस्थिर आय वालों के लिए जरूरी

अगर आप: फ्रीलान्सर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनिश्चित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देना।

कितना कम या ज्यादा है सही ? : बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश राशि भी कम हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें ?

- सेविंग अकाउंट सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
- शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
- स्वीप-इन एफडी यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि खत: एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक बेंक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है। ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

अगर आदत जल्दी बनती है तो जोखिम भी रहता है सीमित

सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बन सकती है जेन जेड, रिटायरमेंट तक तैयार हो सकता है बड़ा फंड

समय जितना ज्यादा
कंपाउंडिंग का असर
उतना बढ़ा होगा

निवेश मंत्र

बिजनेस डेस्क

आज की युवा पीढ़ी यानी जेन जेड कमाई के साथ-साथ निवेश को लेकर भी पहले से ज्यादा जागरूक हो रही है। 1997 से 2012 के बीच जन्मी यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी-फ्रेंडली है और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए निवेश करना पसंद करती है, लेकिन बड़ा सवाल यह है क्या सच में सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बना जा सकता है? जवाब है हां, अगर शुरुआत जल्दी हो और निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे।

क्या है एसआईपी और क्यों खास ?
एसआईपी यानी सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान। यह तरीका आपको हर महीने एक तय राशि निवेश करने की सुविधा देता है। एसआईपी के जरिए निवेश मुख्य रूप से म्यूचुअल फंड में किया जाता है, जिसका प्रदर्शन शेयर बाजार पर निर्भर करता है। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत है कंपाउंडिंग-यानी आपके निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे रिटर्न कमाता है। यही चक्र समय के साथ बड़े फंड में बदल जाता है। मान लीजिए आपकी उम्र 20 साल है और अगर हर महीने 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं। आप यह निवेश 60 साल की उम्र तक यानी 40 साल तक जारी रखते हैं। यदि सालाना 12% अनुमानित रिटर्न मिले।



इसे ऐसे समझें

- कुल निवेश: 1000×12 महीने × 40 साल = 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 97.93 लाख रुपये यानी सिर्फ 4.8 लाख रुपये निवेश करके आप करीब 98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।
- यदि सालाना 15% अनुमानित रिटर्न मिले
- कुल निवेश : 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 2.30 करोड़ रुपये
- यहां साफ दिखता है कि रिटर्न में सिर्फ 3% का अंतर भी लंबे समय में कितना बड़ा बदलाव ला सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

जल्दी शुरुआत क्यों है जरूरी ?

अगर आप 20 की उम्र में शुरुआत करते हैं तो आपके पास 40 साल का समय है। लेकिन यदि यही निवेश 30 की उम्र से शुरू करते हैं, तो आपके पास केवल 30 साल बचेंगे और फंड का आकार काफी छोटा हो जाएगा। समय जितना ज्यादा, कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा।

बाजार जोखिम समझना जरूरी

- एसआईपी पूरी तरह शेयर बाजार से जुड़ी होती है। ऐसे में जरूरी बातें समझना जरूरी है।
- रिटर्न कभी भी फिक्स नहीं होता।
- बाजार में तेजी होगी तो ज्यादा रिटर्न मिलेगा।
- गिरावट के समय पोर्टफोलियो में अस्थायी

टाप 5 फंड्स का 5 साल का एनुअल रिटर्न 19 से 20% तक रहा

नुकसान हो सकता है।
● लंबी अवधि में जोखिम कम हो जाता है।
● इतिहास बताता है कि लंबी अवधि में इक्विटी बाजार ने बेहतर रिटर्न दिया है, लेकिन धैर्य बनाए रखना जरूरी है।

टैक्स का भी रखें ध्यान

एसआईपी से मिलने वाला मुनाफा पूरी तरह टैक्स-फ्री नहीं होता। इक्विटी फंड में एक साल से ज्यादा निवेश रखने पर लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स टैक्स लागू होता है (निर्धारित सीमा से ऊपर के लाभ पर)। इसलिए रिटायरमेंट प्लानिंग करते समय टैक्स की गणना भी शामिल करें।

खास सलाह

- लंबा निवेश समय
- डिजिटल प्लेटफॉर्म तक आसान पहुंच
- रिस्क लेने की क्षमता
- अगर आप अभी से 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं और हर साल अपनी आय बढ़ने पर एसआईपी की रकम भी बढ़ाते हैं (स्टेप अप एसआईपी), तो फंड का आकार कई गुना हो सकता है।

निवेश शुरू करने से पहले रखें इन बातों का ध्यान

- इमरजेंसी फंड जरूर बनाएं
- हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस लें।
- अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार फंड चुनें।
- निवेश लंबी अवधि के लिए रखें, बीच में बंद न करें।
- बाजार गिरने पर घबराकर एसआईपी बंद न करें।

क्या 1000 रुपये काफी

शुरुआत के लिए 1000 रुपये बिल्कुल पर्याप्त है। असली बात रकम नहीं, अनुशासन और निरंतरता है। समय के साथ आप एसआईपी बढ़ा सकते हैं। छोटी रकम से शुरुआत करने का फायदा यह है कि आदत जल्दी बनती है और जोखिम सीमित रहता है। जेन जेड के लिए यह सुनहरा मौका है। 20 की उम्र में शुरू की गई 1000 रुपये की एसआईपी 60 की उम्र तक करोड़ों का फंड बना सकती है। बशर्त निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे और अनुशासन बना रहे। याद रखिए, अमीर बनने के लिए बड़ी सैलरी नहीं, बल्कि जल्दी शुरुआत, धैर्य और कंपाउंडिंग की समझ जरूरी है। अगर आज कदम उठाएं, तो रिटायरमेंट के समय आपके पास भारी-भरकम फंड हो सकता है। अब सवाल यह है कि आप अपनी पहली एसआईपी कब शुरू कर रहे हैं?

खबर संक्षेप

कायस्थवाड़ा में छापा मारकर शराब पकड़ी
रेवाड़ी। सिटी पुलिस ने कायस्थवाड़ा में अवैध रूप से शराब बेचने के आरोपी को काबू करते हुए उसके कब्जे से अवैध शराब बरामद की है। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि कायस्थवाड़ा निवासी रूपेश खासापुरा मोहल्ले में अवैध रूप से शराब की बिक्री करता है। इससे मोहल्ले का माहौल खराब हो रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर जाकर दबिश दी, तो आरोपी के कब्जे से 52 पत्रों शराब बरामद हुई। पुलिस ने उसे मौके पर ही काबू कर लिया। आरोपी के खिलाफ एक्साइज एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। निजी मुचलके पर रिहा कर दिया गया।

दहेज प्रताड़ना के मामलों में दो गिरफ्तार रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न व जान से मारने की धमकी देने के मामलों में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। महिला थाना पुलिस ने शहर निवासी एक विवाहिता की शिकायत के आधार पर दोनों पक्षों के बीच काउंसिलिंग के जरिए समझौता कराने के प्रयास किए थे। कोई बार पुलिस थाने में दोनों पक्षों के बीच बातचीत हुई, लेकिन उनमें सुलहनामा नहीं हुआ। पुलिस ने 5 मार्च को केस दर्ज करने के बाद राजस्थान के लोहड़ियावास निवासी प्रीतम को गिरफ्तार कर लिया। कोसली थाना पुलिस ने 20 फरवरी को दर्ज मामले में गुरुग्राम के खेटावास निवासी प्रिंस को काबू किया है।

सड़क हादसों के बाद फरार चालक काबू रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसों के बाद फरार दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। कसोला पुलिस ने गत 25 फरवरी को हुए हादसे के बाद वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में सिरसा के प्रताप नगर निवासी गुलाब सिंह को गिरफ्तार कर लिया। उसका वाहन भी पुलिस ने कब्जे में ले लिया। रोहड़ई थाना पुलिस ने 5 मार्च को हुए हादसे के बाद दर्ज मामले में चांदनवास निवासी वाहन चालक अमित को गिरफ्तार कर लिया। दोनों को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

पोक्सो एक्ट के तहत एक आरोपी गिरफ्तार
कोसली। पुलिस ने नाबालिग का पीछा करते हुए उसे परेशान करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। एक गांव निवासी पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर पुलिस ने अजीत नाम युवक के खिलाफ हाल ही में पोक्सो एक्ट सहित विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। पुलिस ने इस मामले में जांच के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसका मोबाइल फोन भी पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया। आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

एनडीपीएस एक्ट के आरोपी भेजे जेल रेवाड़ी। शहर में नशीला पदार्थ सप्लाई करने के मामले में सिटी पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने एक आरोपी को नशा तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया था। पूछताछ के दौरान उसने गंगुलिया रणमोख निवासी कमल और खलीलपुर निवासी योगेश पर नशीला पदार्थ मुहैया कराने की बात स्वीकार की थी। पुलिस ने उससे पूछताछ के बाद दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

मारपीट मामले के आरोपी अभिरक्षा में बावल। कस्बे की एक ढाणी में मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में पुलिस ने दो नाबालिग अभिरक्षा में लिए हैं। पुलिस ने अस्पताल में उपचारार्थीन घायल के बयान पर गत 24 जनवरी के विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। पीड़ित ने लाठी-डंडों से मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप लगाए थे। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में दो नाबालिग अभिरक्षा में ले लिए। बाद में दोनों आरोपियों को तपतीश में शामिल करते हुए रिहा कर दिया गया।

घरौंडा में ड्यूटी के दौरान डॉक्टर के साथ पुलिसकर्मियों के दुर्व्यवहार का मामला डॉक्टर्स की हड़ताल के कारण इमरजेंसी सेवाओं को छोड़कर ओपीडी रही बंद, परेशान हुए मरीज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी
करनाल के घरौंडा में पुलिसकर्मियों की ओर से ड्यूटी के दौरान एक चिकित्सक के साथ की गई मारपीट और दुर्व्यवहार के विरोध में हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विसेज यानि एचसीएमएस एसोसिएशन के आह्वान पर शनिवार को जिले में नागरिक अस्पताल में सभी डॉक्टरों एक दिन की हड़ताल पर रहे। हड़ताल के दौरान

इमरजेंसी सेवाओं को छोड़कर ओपीडी पूरी तरह बंद रही। चिकित्सकों ने दोषी पुलिसकर्मियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। हड़ताल के दौरान इमरजेंसी सेवाओं को छोड़कर ओपीडी पूरी तरह बंद रही। सभी डॉक्टर धरने पर बैठे रहे। डॉक्टरों की हड़ताल के दौरान ओपीडी के बाहर मरीजों की भीड़ रही और मरीज परेशान नजर आए।

ओपीडी की पूर्वी तक भी नहीं बनाई जा रही है। डॉक्टरों ने सरकार से मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषी पुलिसकर्मियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की



रेवाड़ी। नागरिक अस्पताल में हड़ताल पर बैठे डॉक्टरों। फोटो: हरिभूमि

▶▶ डॉक्टरों रूम के बाहर मरीजों की भीड़ रही
हड़ताल के दौरान नागरिक अस्पताल की ओपीडी पूरी तरह बंद रही। डॉक्टरों रूम के बाहर मरीजों की भीड़ रही। काफी मरीजों को दूर से आने के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। करीब 80 किलोमीटर दूर से अपनी पत्नी को इलाज के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे एक व्यक्ति ने बताया कि उसकी पत्नी गंभीर दर्द से पीड़ित है, लेकिन अस्पताल पहुंचने पर पता चला कि डॉक्टरों की हड़ताल पर है। ओपीडी की पूर्वी तक भी नहीं बनाई जा रही है। डॉक्टरों ने सरकार से मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषी पुलिसकर्मियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है।

गांजा उपलब्ध कराने के मामले में महिला आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी
सीआईए कोसली ने अवैध मादक पदार्थ गांजा उपलब्ध कराने के मामले में एक महिला आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गई महिला आरोपी की पहचान राजस्थान के जिला कोटपुतली बहरोड के गांव देहमी निवासी सुशीला के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। गत 5 मार्च को पुलिस को सूचना मिली थी कि संजय कुमार निवासी गांव हुडिया खुर्द जिला कोटपुतली बहरोड राजस्थान गांजा बेचने का काम करता है तथा नीमराणा राजस्थान से गांजा लेकर गांव पालड़ा की सीमा में चाय के खोखे पर गांजा बेचने के लिए आया।



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्तार में महिला आरोपी। फोटो: हरिभूमि

सूचना पर सीआईए ने आरोपी को 1 किलो 108 ग्राम गांजे के साथ काबू कर लिया। पुलिस की ओर से पूछताछ में आरोपी संजय कुमार ने बताया कि उसे यह अवैध मादक पदार्थ गांजा राजस्थान के जिला कोटपुतली बहरोड के गांव देहमी

जमीन की खरीद-फरोख्त में धोखाधड़ी, तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज

कोसली। झोलरी गांव की एक महिला ने जमीन की खरीद-फरोख्त में धोखाधड़ी करने के आरोप में तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज कराया है। पुलिस ने मामले की जांच व आरोपियों की तलाश शुरू कर दी। पुलिस शिकायत में सुनीता ने बताया कि उसका पति भारतीय सेना में कार्यरत है। उसके पति ने हेमंत नाम के युवक के साथ 2 एकड़ जमीन का सौदा लगभग 20 लाख रुपये में किया था। यह राशि कोसली के दे दी गई थी। इसके बाद जब जमीन की रजिस्ट्री का समय आया, तो हेमंत रजिस्ट्री कराने में आनाकानी करने लगा। उसके पति ने अपने स्तर पर पता लगाया, तो यह बात सामने आई कि हेमंत ने अपने पड़ोसी दूसरे युवक हेमंत की जमीन का सौदा धोखे से तय किया था। इस कार्य में एक पूर्व सरपंच भी संलिप्त बताया गया है। पुलिस ने महिला की शिकायत के आधार पर केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू कर दी।

आईएमए ने घरौंडा की घटना पर जताया रोष डॉक्टरों ने काली पट्टी बांधकर किया विरोध

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी
घरौंडा के सिविल अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक के साथ हुई अभद्रता पर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने रोष व्यक्त करते हुए इस घटना की कड़े शब्दों में निंदा की है। आईएमए की ओर से शनिवार को काली पट्टी बांधकर घटना का विरोध किया गया। संगठन ने इसे चिकित्सा समुदाय की गरिमा और सुरक्षा पर आघात बताया है। आईएमए की जिला अध्यक्ष डा. नीरज यादव ने कहा कि चिकित्सक दिन-रात समाज की सेवा में समर्पित रहते हैं और मरीजों के जीवन की रक्षा के लिए निरंतर कार्य करते हैं। ऐसे में ड्यूटी के दौरान चिकित्सकों के साथ इस प्रकार का दुर्व्यवहार अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।



रेवाड़ी। काली पट्टी बांधकर रोष जताते आईएमए के डॉक्टरों। फोटो: हरिभूमि

दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग
आईएमए रेवाड़ी इस कठिन समय में आईएमए करनाल और वहां के सभी चिकित्सकों के साथ मजबूती से खड़ी है। उन्होंने प्रशासन से दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। मुख्य संरक्षक डा. नीलम यादव ने कहा कि चिकित्सकों के साथ किसी भी प्रकार की हिंसा या अभद्रता को किसी भी परिस्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। डा. पूनम यादव व डा. शिव रतन यादव ने प्रशासन से इस मामले में तत्काल कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं को पुनरावृत्ति न हो सके। घटना के विरोध में आईएमए के डॉक्टरों ने काली पट्टियां बांधकर विरोध दर्ज कराया और चिकित्सा समुदाय के सम्मान व सुरक्षा की मांग उठाई। इस अवसर पर डा. प्रशांत यादव, डा. दीपक यादव व आईएमए महासचिव डा. पूजा अनेजा सहित अनेक डॉक्टर उपस्थित थे।

शराब से भरी बोलेरो गाड़ी पकड़ी, 35 पेट्टी अवैध शराब बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी
देशी शराब की 15 पेट्टियां अर्धे व पत्तों की 10-10 पेट्टियां हुई बरामद
हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी
थाना सदर पुलिस ने अवैध शराब से भरी एक बोलेरो गाड़ी पकड़ने में सफलता हासिल की है। गाड़ी में अवैध शराब की 35 पेट्टियां भरी हुई थीं। पुलिस ने आरोपी को मौके पर ही काबू करने के बाद उसके खिलाफ केस दर्ज कर लिया। बोलेरो गाड़ी को भी पुलिस ने कब्जे में ले लिया। पुलिस को सूचना मिली थी कि चिल्हड़ निवासी विकास अवैध शराब का धंधा करता है। वह बोलेरो गाड़ी से शराब लेकर जा रहा है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मुखबिर के बताए स्थान के पास नाकेबंदी कर दी। वाहनों



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्तार में आरोपी विकास। फोटो: हरिभूमि

की तलाशी के लिए अभियान शुरू किया गया। इसी दौरान एक बोलेरो गाड़ी को रकबाकर चेक किया, तो उसमें शराब की पेट्टियां भरी हुई थीं। पुलिस ने आबकारी विभाग के अधिकारी को सूचना देकर मौके पर बुलाया। गाड़ी में

देवी शराब की बोतलों की 15 पेट्टियां, अर्धे व पत्तों की 10-10 पेट्टियां बरामद हुईं। पुलिस ने विकास को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया। बाद में उसके खिलाफ एक्साइज एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया गया।
रेवाड़ी। सिटी पुलिस ने नशीला पदार्थ बेचने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से 16.54 ग्राम गांजा व 2.16 ग्राम स्मैक बरामद हुई है। पुलिस को सूचना मिली कि थी कि युवक नाशियान्जी रोड मोहल्ला शांति नगर कट के पास अवैध रूप से नशीला पदार्थ बेच रहे हैं। सूचना पर पुलिस ने तुलुन रेंडिंग पार्टी तैयार करके बताए हुए स्थान पर पहुंचकर आरोपियों को काबू करके नाम पता पूछा तो उन्होंने अपना नाम कमल निवासी नानलिया रणमोख व योगेश निवासी गांव खलीलपुर जिला गुरुग्राम बताया। ड्यूटी में स्टैट के साथ लेकर आरोपियों की तलाशी ली गई तो आरोपी कमल के कब्जे से 16.54 ग्राम गांजा व आरोपी योगेश के कब्जे से 2.16 ग्राम नशीला पदार्थ स्मैक बरामद हुआ। दोनों आरोपियों को पुलिस ने मौके पर ही काबू कर लिया। उनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।



पंद्रह दिनों से खुला पड़ा सीवर होल, लोगों को हादसे का डर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी
शहर के वार्ड नंबर-29 की चिरंजीलाल कॉलोनी में पिछले 15 दिनों से सीवर का होल खोदकर डाला हुआ है, जिससे गड्ढे के कारण आए दिन हादसा होने का अंदेशा बना रहता है। गत 28 फरवरी को खुले गड्ढे में गिरने से वार्ड निवासी सुमन लता घायल हो गईं। हादसे में उनके हाथ और पैर में फ्रैक्चर हो गया। सुमन लता का कहना है कि उनके गांव की हर गली पक्की है, लेकिन यहाँ शहर में वार्ड की

दो मार्केटिंग बोर्ड के बीच फंसा मामला नहीं हो रहा जर्जर सड़क का निर्माण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी
महेंद्रगढ़ के कपूरी से निमोट गांव को जोड़ने वाली लगभग 4 किलोमीटर लंबी सड़क का निर्माण दो जिलों के मार्केटिंग बोर्ड के बीच लटका हुआ है। जर्जर हो चुकी सड़क का निर्माण नहीं होने से कई गांवों के लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने सड़क का जल्द निर्माण करने की मांग की है। जिले के अंतिम छोर पर बसे गांव निमोट से महेंद्रगढ़ जिले के आखिरी गांव कपूरी को जोड़ने वाली सड़क का निर्माण लगभग पांच साल पहले कनीना एग्रीकल्चर मार्केटिंग बोर्ड की ओर से कराया गया था। इस सड़क का बड़ा हिस्सा रेवाड़ी की सीमा में पड़ता है। एक बार निर्माण कराने के बाद कनीना मार्केटिंग बोर्ड सड़क की सुध नहीं ले रहा है। रेवाड़ी मार्केटिंग बोर्ड के अधिकारी इसके निर्माण का जिम्मा कनीना बोर्ड का बताते हुए पल्ला झाड़ रहे हैं। ऐसे में सड़क का निर्माण कार्य लगातार अटक रहा है। कई गांवों के लोग हो रहे परेशान निमोट के सरपंच रामस्वरूप ने बताया कि सड़क का निर्माण कराने के लिए



रेवाड़ी। निमोट व कपूरी के बीच दयनीय हालत में सड़क। फोटो: हरिभूमि

वह कई बार अधिकारियों से मिल चुके हैं। इसके बावजूद सड़क का निर्माण नहीं कराया जा रहा है। इस समय सड़क टूटकर बहाल हो चुकी है। इस सड़क से आसपास के करीब आधा दर्जन गांवों के लोगों का आवागमन होता है। टूटी सड़क के कारण हादसों की आशंका बनी रहती है। ग्रामीणों ने प्रशासन से इस सड़क का तुरंत निर्माण कराने की मांग की है।

सूचना

में, मिशन सिंह पुत्र श्री बलवोर सिंह निवासी गांव उन्मयापुर तह. कोसली जिला रेवाड़ी बयान करता है कि निला गुरुग्राम के लोकगा गांव निवासी सुरेंद्र से विवाहित मेरे सगी लड़की शंभु मेरे व अपने समुदाय वालों के कहने सुनने से बाहर है। यह अपने समुदाय को छोड़कर कहीं और रह रही है। अब मेरा व मेरे परिवार के अन्य किसी सदस्य का उससे कोई लेन देन व सम्पर्क नहीं है। मैं शंभु को अपनी सम्पत्त चल अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूँ। यदि कोई व्यक्ति उससे किसी प्रकार का कोई लेन देन अथवा व्यवहार करता है तो वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरे व मेरे परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

आईएमए की ओर से महिला दिवस पर वाकौथान आज

रेवाड़ी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की ओर से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में रविवार को एडमिनिस्ट्रेशन, पुलिस डिपार्टमेंट और हेल्थ डिपार्टमेंट के साथ मिलकर वाकौथान का आयोजन किया जाएगा। आईएमए की जिला अध्यक्ष डा.नीरज यादव ने बताया कि जिले की 20 प्रेरणादायक एवं सशक्त महिलाओं को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर पिकांथान पर सम्मानित किया जाएगा। वाकौथान का आयोजन 8 मार्च को सुबह 6:30 बजे बाल भवन मॉडल टाउन से किया जाएगा।

साबरमती सुपरफास्ट ट्रेन का हुआ संचालन

रेवाड़ी। रेलवे की ओर से होली पूर्व और टी-20 विश्व कप फाइनल के दौरान अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियों की सुविधा के लिए नई दिल्ली-साबरमती आरक्षित एक तरफा सुपरफास्ट स्पेशल रेलसेवा का संचालन किया जा रहा है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी अमित सुश्रंन के अनुसार गाड़ी संख्या 04062 नई दिल्ली-साबरमती एक तरफा स्पेशल आरक्षित सुपरफास्ट एक्सप्रेस रेलसेवा शनिवार को नई दिल्ली से रात्रि 11:45 बजे प्रस्थान करके रविवार को जयपुर स्टेशन पर सुबह 4:50 आगमन व 5 बजे प्रस्थान कर दोपहर 2:30 बजे साबरमती पहुंचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में दिल्ली कैंट, गुरुग्राम, रेवाड़ी, जयपुर, अजमेर और पालनपुर स्टेशनों पर ठहराव करेगी।

बीएलओ को निलंबित करने और वार्डबंदी की प्रक्रिया दोबारा कराने की मांग वार्डवाइज मतदाता सूची को लेकर विवाद अन्य वार्डों में वोट शिफ्ट करने के लगे आरोप

कस्बावासी बोले यदि वार्डों में शामिल बाहरी मतदाताओं के नाम नहीं हटाए गए तो न्यायालय का दरवाजा खटखटाने को होंगे मजबूर

हरिभूमि न्यूज ॥ रेवाड़ी/धरुहेड़ा

नगर परिषद और धरुहेड़ा नगर पालिका के संभावित चुनाव से पहले मतदाता सूची को लेकर विवाद शुरू हो गया है। कई लोगों ने सूची में गड़बड़ी के आरोप लगाए हैं। ये आरोप किसी बाहरी व्यक्ति पर नहीं बल्कि पार्षदों पर ही लगाए जा रहे हैं। नगरपालिका धरुहेड़ा की वार्डवार मतदाता सूची को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। स्थानीय लोगों और पूर्व पार्षद ने आरोप लगाया है कि बीएलओ की मिलीभगत से मतदाता सूची में भारी गड़बड़ी की गई है। आरोप है कि जो मतदाता संबंधित वार्डों में निवास नहीं करते, उनके नाम भी सूची में जोड़ दिए गए हैं, जबकि एक ही परिवार के सदस्यों के नाम अलग-अलग वार्डों में दर्ज कर दिए गए हैं। पूर्व पार्षद होशियार सिंह उर्फ बिट्टू ने कहा कि मतदाता सूची तैयार करते समय नियमों की अनदेखी की गई है। उनका कहना है कि जिस वार्ड में व्यक्ति निवास करता है, उसकी वोट उसी वार्ड में होनी चाहिए, लेकिन धरुहेड़ा में ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने आरोप लगाया कि वार्डबंदी केवल खानापूर्ति बनकर रह गई है और वार्डों से बाहर के मतदाताओं को शामिल करने में बड़ा खेल हुआ है। पूर्व पार्षद ने



रेवाड़ी। मतदाता सूचियों की जांच करते हुए कर्मचारी व लोगों की भीड़।

फोटो : हरिभूमि

आरोप लगाया कि बीएलओ ने घर बैठे ही सूची तैयार कर दी और मौके पर जाकर सत्यापन नहीं किया। चुनाव लड़ने के इच्छुक कुछ लोगों की मिलीभगत से यह हेरफेर की गई है। लोगों ने संबंधित बीएलओ को निलंबित करने और वार्डबंदी की प्रक्रिया दोबारा कराने की मांग की।

शनिवार को नगरपालिका कार्यालय में मतदाता सूची में खामियों को लेकर लोगों की काफी भीड़ रही। स्थानीय निवासी मयंक यादव ने बताया कि पिछले चुनाव में उनकी वोट वार्ड नंबर 10 में थी, लेकिन अब सूची में उनका नाम नहीं है। उन्होंने कहा है कि वार्ड नंबर-11 से 176 वोट, वार्ड नंबर-10 में कैसे

निष्पक्ष तरीके से की जा रही जांच : डीसी

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपयुक्त अभियेक मीणा ने आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि मतदाता सूची बीएलओ के माध्यम से तैयार की जाती है और इसमें पार्षदों की कोई भूमिका नहीं होती है। अगर फिर भी किसी को आपत्ति है तो शिकायत कर सकते हैं। सभी शिकायतों की निष्पक्ष जांच की जाएगी। डीसी ने बताया कि मतदाता सूची के संशोधन के लिए कई स्तरों पर काम किया जा रहा है।

कर दी गई। वार्ड नंबर 4 व 5 की वोट वार्ड नंबर-एक में कर दी गई है। वार्ड नंबर 3 से 6 में, वार्ड नंबर 9 से 10 में और वार्ड नंबर 13 से 12 वार्ड में वोट शिफ्ट की गई है। धर्मवीर यादव ने डीसी को शिकायत पत्र सौंपा है। उन्होंने बताया कि वार्ड नंबर-17 से वार्ड नंबर एक में 49 वोट शिफ्ट कर दी गई है, जबकि उनकी कोई सहमति नहीं है। वार्ड रिजर्व होने के कारण चुनाव लड़ने वालों ने मिलीभगत करके ये खेल किया है।

कस्बावासियों ने चेतवानी देते हुए कहा कि यदि वार्डों में शामिल बाहरी मतदाताओं के नाम नहीं हटाए गए और सूची में सुधार नहीं किया गया तो वे न्यायालय का दरवाजा खटखटाने को मजबूर होंगे। लोगों का कहना है कि हर वोट को ठीक कराने के लिए अलग-अलग फार्म भरने पड़ रहे हैं, जिससे आमजन को भारी परेशानी हो रही है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से बीएलओ को वार्डों में भेजकर दोबारा सत्यापन कराकर निष्पक्ष तरीके से संशोधित मतदाता सूची जारी करने की मांग की है।

थाना प्रभारियों ने टीम के साथ की पैदल गश्त, सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

रेवाड़ी। जिला पुलिस की ओर से शहर में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने व आपराधिक गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए पैदल गश्त की जा रही है। गश्त के दौरान पुलिस दफ्तरवासी व लोगों को सुरक्षा का अहसास करा रही है। एसएसओ शहर इंस्पेक्टर खुश सिंह, धरुहेड़ा इंस्पेक्टर कश्मीर सिंह, रोहताड़ इंस्पेक्टर विद्यासागर कसौला, रौपेक्टर सतीश कुमार, चौकी इंचार्ज कुंड एसआई योगेश कुमार व चौकी इंचार्ज सेक्टर-3 पीएसआई राकेश कुमार ने टीमों के साथ अपने-अपने क्षेत्र में पैदल गश्त करके सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने स्थानीय निवासियों से बातचीत कर उनकी समस्याओं को सुना और क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस की प्रतिबद्धता दोहराई।



सोलर सिस्टम के लिए न्यूनतम ब्याज दर पर उपलब्ध कराई जा रही ऋण की सुविधा

हरिभूमि न्यूज ॥ रेवाड़ी
बिजली उपभोक्ताओं को बिल से राहत प्रदान कर आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के ■ प्रधानमंत्री सूर्य साथ ही सौर ऊर्जा के घर भुगत उपयोग को बढ़ावा देकर बिजली योजना पर्यावरण संरक्षण में भी चलाई जा रही है सरकार की ओर से महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। केंद्र व प्रदेश सरकार की ओर से प्रधानमंत्री सूर्य घर भुक्त बिजली योजना चलाई जा रही है। डीसी अभियेक मीणा ने बताया कि केंद्र एवं प्रदेश सरकार की संयुक्त पहल के चलते सोलर रूफटॉप सिस्टम अब अत्यंत किफायती हो गया है। पात्र परिवारों को दी जा रही सब्सिडी के चलते सोलर सिस्टम लगवाना काफी किफायती हो गया है। जिन उपभोक्ताओं के लिए प्रारंभिक निवेश करना संभव नहीं है, उनके लिए सरकारी बैंकों के माध्यम से न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने बताया कि दो किलोवाट क्षमता का सोलर सिस्टम प्रतिदिन लगभग 8 से 10 यूनिट बिजली उत्पादन करता है, जिससे मासिक उत्पादन करीब 300 यूनिट तक पहुंच जाता है। यह एक मध्यमवर्गीय परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है।



हरिभूमि न्यूज ॥ बावल
सरवन इंटरनेशनल स्कूल बावल में शनिवार को कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए पप्पूर चारवेज ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बोर्ड परीक्षाओं के बाद विद्यार्थियों को उपयुक्त शैक्षणिक स्ट्रीम और करियर मार्ग चुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना था। मुख्य अतिथि डा. नवीन पिपलानी डिप्टी रजिस्ट्रार आईजीयू व प्रशांत गुप्ता ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

हरिभूमि न्यूज ॥ बावल
सरवन इंटरनेशनल स्कूल बावल में शनिवार को कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए पप्पूर चारवेज ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बोर्ड परीक्षाओं के बाद विद्यार्थियों को उपयुक्त शैक्षणिक स्ट्रीम और करियर मार्ग चुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना था। मुख्य अतिथि डा. नवीन पिपलानी डिप्टी रजिस्ट्रार आईजीयू व प्रशांत गुप्ता ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

हरिभूमि न्यूज ॥ बावल
सरवन इंटरनेशनल स्कूल बावल में शनिवार को कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए पप्पूर चारवेज ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बोर्ड परीक्षाओं के बाद विद्यार्थियों को उपयुक्त शैक्षणिक स्ट्रीम और करियर मार्ग चुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना था। मुख्य अतिथि डा. नवीन पिपलानी डिप्टी रजिस्ट्रार आईजीयू व प्रशांत गुप्ता ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

मांग स्टेट हाई-वे 19 रेवाड़ी से महेंद्रगढ़ वाया डहीना सड़क मार्ग को फोरलेन बनाने की मांग

कोसली एसडीएच को 50 बेड से बढ़ाकर 100 बेड का अस्पताल बनाने की उठी मांग

मुख्यमंत्री नायब सैनी व स्वास्थ्य मंत्री आरती राव का आभार व्यक्त किया
हरिभूमि न्यूज ॥ कोसली

विधायक अनिल यादव ने विधानसभा में शून्य काल के दौरान कोसली कस्बे की विभिन्न मांगों को सरकार के समक्ष उठाया। उन्होंने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मांगों को शीघ्र पूरा कराने का अनुरोध किया। विधायक ने कोसली क्षेत्र के विकास के लिए दी गई 768.4 करोड़ रुपये की राशि के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि कोसली में 105 करोड़ रुपये की राशि प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री तथा स्वास्थ्य मंत्री आरती राव का आभार व्यक्त किया। अनिल यादव ने स्टेट हाई-वे 19 रेवाड़ी से महेंद्रगढ़ वाया डहीना सड़क मार्ग को फोरलेन बनाने की मांग की। उन्होंने कहा कि



रेवाड़ी। हरियाणा विधानसभा में अपनी मांगों को रखते हुए विधायक अनिल यादव। कोसली सब डिवीजन अस्पताल को 50 बेड से बढ़ाकर 100 बेड का अस्पताल बनाया जाए ताकि ग्रामीण अंचल के लोगों को पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं मिल सकें। विधायक ने महिला रीजनल सेंटर कृष्ण नगर को महिला विश्वविद्यालय का दर्जा देने की भी मांग रखी। उन्होंने डहीना पीएचसी को अपग्रेड करके सीएचसी का दर्जा प्रदान करने का अनुरोध किया। इनके अलावा विधायक ने राजकीय महाविद्यालय नाहड़ में पीजी की कक्षाएं शुरू कराने व गांव पाल्हावास में उप तहसील भवन का निर्माण कार्य शुरू करने की मांग की। उन्होंने गांव कंवली के खेल स्टेडियम में हॉकी एस्ट्रो टर्फ का मैदान बनवाने की प्रशासनिक अनुमति दिए जाने का अनुरोध भी किया। उन्होंने कहा कि कोसली में आर्युबी को मंजूरी मिल गई है, जिसका निर्माण कार्य जल्द शुरू किया जाए।

अवैध कॉलोनिजों को नियमित किया जाए विधायक ने कहा कि कोसली में फिलहाल एक हज़ा सेक्टर है, जिसमें 80 प्रतिशत से ज्यादा मकान बन चुके हैं। सेक्टर में जगह न होने के कारण कस्बे में अवैध कॉलोनिजों पनप रही हैं। उन्होंने अवैध कॉलोनिजों को नियमित किए जाने व कोसली का नया मास्टर प्लान तैयार करने की मांग की। उन्होंने सादतनगर गांव में नर्सिंग कॉलेज के नवनिर्मित भवन में आने वाले सत्र के दौरान कक्षाएं शुरू कराने की मांग भी उठाई। कोसली में नए बस स्टैंड के निर्माण को गति देते हुए सब डिपो की वर्कशॉप को शुरू कराने और परिवहन विभाग के 92 अनुमोदित पदों पर कर्मचारियों को नियुक्ति करने का आग्रह भी किया।

खबर संक्षेप



यूपीएससी एग्जाम में सफल होने पर ग्रामवासियों ने रोहित का किया सम्मान

रेवाड़ी। गांव काकोड़िया निवासी रोहित यादव ने यूपीएससी एग्जाम क्वालीफाई किया है। यदुवशी स्कूल से पास आउट रोहित कुमार ने घोषित परिणाम में ऑल इंडिया स्तर पर 506 रैंक लाकर पूरे ग्रामीण क्षेत्र में लोगों का मान सम्मान बढ़ाया है। इस सफलता पर यदुवशी ग्रुप के चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने रोहित, उसके परिवार व ग्रामवासियों को बधाई दी। स्कूल मैनेजमेंट की ओर से शनिवार को रोहित व उसके परिवार को काकोड़िया जाकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर स्कूल के डायरेक्टर कुंभेश यादव, प्राचार्य सुकेन्द्र सिंह, शिक्षाविद विनोद कुमार व ऑब्जर्वर एसके सिंह उपस्थित थे।



लोक अदालत में विचाराधीन कैदियों को उपलब्ध कराई कानूनी सहायता

रेवाड़ी। शनिवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अमित वर्मा की ओर से जिला जेल में लोक अदालत का आयोजन किया गया। अदालत के दौरान मौके पर ही जिला जेल में बंद विचाराधीन कैदियों को कानूनी सहायता उपलब्ध करावाई गई। डालसा सचिव ने इस दौरान जिला जेल का निरीक्षण भी किया। उन्होंने जेल में सफाई का जायजा लिया तथा जेल में चलाए जा रहे क्लिनिक में रजिस्ट्रार भी जाते। उन्होंने कहा कि कोई भी सजायाफता कैदी अपनी अपील फाइल करना चाहते हैं तो उसका विवरण भी रजिस्ट्रार से रहे तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को सूचना भिजलाए। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से एक हेल्पलाइन नंबर 01274-220062 चलाया हुआ है, जिस पर आमजन किसी भी प्रकार के कानूनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सीजेएम ने नशा मुक्ति केंद्र का दौरा कर लिया व्यवस्थाओं का जायजा

रेवाड़ी। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की डॉन योजना इन जागरूकता और कल्याण मेंविशेषण के तहत जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम अमित वर्मा ने शनिवार को नशा मुक्ति केंद्र का दौरा किया। इस दौरान केंद्र के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर एवं वोकेशनल काउंसलर जोगिंदर सिंह ने बताया कि नशा मुक्ति केंद्र में फिलहाल 4 रोगी हैं। उन्होंने बताया कि सैदी काउंसलर की ओर से रोगियों की समय-समय पर काउंसलिंग की जाती है तथा उन्हें नशा छोड़ने के प्रति जागरूक किया जाता है। सीजेएम वर्मा ने कहा कि कानूनी सहायता और उनकी सेवाओं के बारे में सभी को जागरूक किया जाए। विधिक सेवा प्राधिकरण का उद्देश्य समाज के कमजोर वर्ग के लोगों के लिए निःशुल्क कानूनी सेवाओं की पेशकश करना व साथ में उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करना है। उन्होंने सभी को नशा न करने के बारे में प्रेरित किया तथा उससे होने वाले नुकसान के बारे में भी अवगत करवाया।



सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में 47 छात्रों ने पाई सफलता

रेवाड़ी। मार्टियर जी.आर अकेडमी दालियावास के विद्यार्थियों ने ऑल इंडिया सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त कर क्षेत्र और अभिभावकों का नाम रोशन किया है। अकेडमी से 47 विद्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। अकेडमी से मुदित, वैभव, दक्ष, यशमीत, विंश, प्रतीक, आरव, महक, बनीत यादव, दिशा, अनंन, मॉनिष, धीरज, मुकुल, तनिष्क, देव यादव, दक्ष यादव, गौरव, हरमीत, रुद्र यादव, आर्यन, पूर्वी, मनन, कमल, देव झगर, परीक्षित व आरव यादव का अलग-अलग सैनिक स्कूलों में चयन हुआ है। सूबेदार महिपाल यादव ने उत्कृष्ट परिणाम के सभी को बधाई दी। इस उपलब्धि से अकेडमी में खुशी का माहौल है।



सरकारी स्कूल में नामांकन बढ़ाने का चला अभियान, ग्रामीणों को गिनाई सुविधाएं

कुंड। राजकीय माध्यमिक विद्यालय राजपुरा ईस्टमुरार के शिक्षकों की ओर से विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ाने के लिए अभियान चलाया गया। शिक्षकों ने अभिभावकों को विद्यालय से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी दी और अपने बच्चों का सरकारी स्कूल में दाखिला कराने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय की मुख्य अस्थापिका सूरेश कुमार ने बताया बच्चों को एनएसएस और और बुनियादी की सुविधा सिर्फ सरकारी स्कूल से आठवीं पास करने के बाद ही प्राप्त हो सकती है। उन्होंने बताया कि विद्यालय के अत्र हर्षित कुमार ने एनएसएस और बुनियादी में सफलता प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष, रमाकांत व कंवर सिंह पंच भी उपस्थित थे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से
साईज संस्करण विशेष छूट राशि
5 X 8 से.मी स्थानीय संस्करण के छ. 1500/-
10 X 8 से.मी अन्दर के पृष्ठ पर छ. 2000/-
+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260



विशेष
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस



बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी संभालने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।



हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लट गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम

आधी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दरवाजा नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एकस्वल्सिंविली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।

भारत की महिला खिलाड़ियों ने कूल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गई कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बंदोबस्त भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

भारत की महिला खिलाड़ियों ने कूल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गई कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बंदोबस्त भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संभाल रही सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा आकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहें हैं।



गढ़ रही जीत की नई परिभाषा

भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में

बदल रही है सामाजिक मानसिकता



हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल कर जीत सकते हैं। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साथ से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होंगी। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।

हासिल कर रही वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बढ़त तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनती है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

परिवार - कार्यक्षेत्र में संतुलन बनाती महिलाएं

बदलाव / अपराजिता

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्होंने सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

दिल्ली, बंगलुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।



मनमुताबिक ले रही निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- ▶ भारत की महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- ▶ उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- ▶ सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- ▶ स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- ▶ कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- ▶ डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर हो नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।



कविता

एक सपना

मैंने देखा था एक सपना सपने में थी मोटर-कार। स्टेयरिंग, सीट, सब कुछ उसमें, पर नहीं थे पहिए चार। मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े? कैसे पकड़ेंगी रफ्तार?' एक जगह जो खड़ी रहे तो हो जाए बिल्कुल बेकार। ठंसेकर बोली मोटर गुड़से, जान गई दूँ गव की बात। पहिए तुम्हें जोड़ने लेंगे तब दौड़ेंगी दिन एक रात। परला पहिया साहस का रो, दूंगा ते श्रालदिश्यास। तीसरा पहिया मेहनत वाला चौथा दृढ़ संकल्प-प्रायास। जब वे चारों संग जुड़ेंगे, राह सरत बन जाएगी। जीवन रुपी गाड़ी तब ही मंगिल तक पहुंचाएगी।

लघुकथाएं

सपनों की उड़ान

तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूँ? दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!
थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूँ, समझ नहीं आ रहा मुझे।' रीमा बुझे स्वर में बोली।
'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सबको छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।
शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रूटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।
थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूँ। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'



'लेकिन बच्चे...!' रीमा ने पूछा।
'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।
'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।
रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

घरेलू महिला

आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रहा है। आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।
आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसे की किशत जमा कर देना जरा।'
इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।
पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसे की रूपए आशी ही जमा करती रहीं थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता



शांति आधे घंटे

मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।
'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाइ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।
'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...' ठेकेदार चिल्लाया।
बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...!'

हार्दिक शुभकामनाएं!

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'
ठेकेदार ने बेला को डांटा।
उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

पुस्तक चर्चा / विज्ञान मूषण

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुंशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम ही, जो विवाह होने के बाद भी देहज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दंपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कटुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं, संपादन: पल्लव, मूल्य: 250 रूपए, प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली

-पूनम पांडे



गोवा की लोक-संस्कृति का रंगोत्सव शिवमो

सांस्कृतिक पर्व

वीरज बसाक

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा, अपनी समृद्ध तटीय सुंदरता के कारण पर्यटकों के बीच जितना लोकप्रिय है, उतना ही अपने समृद्ध लोक संस्कृति के कारण भी यह प्रसिद्ध है। गोवा लोक संस्कृति का सबसे समृद्ध घर माना जाता है और इस समृद्ध लोक संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन प्रतीक है शिवमो फेस्टिवल या शिवमो उत्सव। शिवमो उत्सव केवल एक वार्षिक पर्व भर नहीं है, बल्कि गोवा के ग्रामीण जीवन, लोक परंपराओं, लोक नृत्यों और ऐतिहासिक स्मृतियों का संवेदनशील और सामूहिक उत्सव भी है।

वसंत के आगमन का उत्सव

वास्तव में शिवमो, गोवा का पारंपरिक वसंत उत्सव है, जो होली से शुरू होकर चैत्र माह में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है। इसलिए शिवमो उत्सव को गोवा की लोक आत्मा का उत्सव कहते हैं। क्योंकि इसमें यहां के किसान, मजदूर और ग्रामीण समुदायों की जीवनशैली, उनकी आस्था और उनकी ऐतिहासिक चेतना पूरी भव्यता के साथ अभिव्यक्त होती है। शिवमो का अर्थ है शिशिरोत्सव अर्थात् शीत ऋतु के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव। यह पर्व प्राचीन काल से गोवा के कुछ समुदायों द्वारा मनाया जाता रहा है। फसल कटाई के बाद जब किसान अपनी मेहनत के फल से संतुष्ट होते हैं तो प्रकृति और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शिवमो उत्सव मनाते हैं।

एक हजार साल पुराना उत्सव

इतिहासकारों के मुताबिक शिवमो उत्सव मनाने की परंपरा कम से कम 1000 साल पुरानी है। पुर्तगाली शासन के

दौरान भी गोवा के स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में बनाए रखा। वास्तव में यह उत्सव गोवा के हिंदू समुदाय के लिए विशेष मायने रखता है। लेकिन इसकी लोक-रंगत और सांस्कृतिक आकर्षण के कारण आज इसमें सभी समुदायों की भागीदारी होती है।

कई लोकनृत्यों का आयोजन

शिवमो उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक लोकनृत्य और संगीत के भव्य आयोजन होते हैं। इन नृत्यों में गोवा के ग्रामीण जीवन, युद्ध कथाओं, पौराणिक प्रसंगों और सामाजिक घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। शिवमो उत्सव में शामिल प्रमुख लोक नृत्यों में घोड़े मोदनी नृत्य सबसे प्रमुख है। वास्तव में यह योद्धाओं का नृत्य होता है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में विजयी योद्धा, घोड़ों पर सवार होकर नृत्य किया करते थे। लेकिन आज लोक कलाकार घोड़े की मुखाकृति के मुखौटे पहनकर और हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वास्तव में गोवा के गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। इस उत्सव का

दूसरा प्रमुख नृत्य है-रोमातामाल। यह सामूहिक नृत्य है, इसमें कलाकार ढोल, ताशा और झांझे की धुन पर नाचते हैं। इनके अलावा जो प्रमुख नृत्य इस उत्सव में खूब देखने को मिलते हैं, उसे फुगड़ी और जागर नृत्य कहते हैं। ये नृत्य गोवा के ग्रामीण और आदिवासी जीवन को दर्शाते हैं। इन प्रमुख नृत्यों के माध्यम से गोवा में लोग शिवमोत्सव में सवियों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करते हैं।

विगत 5 मार्च से आरंभ हुआ गोवा का शिवमो उत्सव, आगामी 18 मार्च तक आयोजित होगा। यह गोवा की सांस्कृतिक पहचान है। यह उत्सव स्थानीय निवासियों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और उन्हें अपनी परंपरा पर गर्व करने का अवसर भी देता है। इस उत्सव की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

निकलती हैं भव्य झांकियां

शिवमो उत्सव के दौरान गोवा के प्रमुख शहरों जैसे पणजी, मडगांव, वास्को, पोंडा और मापुसा में भव्य शोभा यात्राएं भी निकाली जाती हैं। इन शोभा यात्राओं में रंग-बिरंगी झांकियां होती हैं, जो पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक विषयों को दर्शाती हैं। इन झांकियों में रामायण और महाभारत के दृश्य, गोवा के लोक देवताओं की कथाएं, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक जागरूकता के संदेश दिए जाते हैं। यह परंपरा आधुनिक, सामाजिक चेतना का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण और शहरी शिवमो

ग्रामीण और शहरी शिवमो उत्सव जैसे एक-दूसरे से थोड़े भिन्न होते हैं, लेकिन ये दो रूप भले अलग हों, लेकिन उनकी आत्माएं एक होती हैं। इन दो अलग-अलग यानी शहरी और ग्रामीण शिवमो को क्रमशः धाकटो शिवमो यानी छोटा शिवमो और व्हाडलो शिवमो यानी बड़ा शिवमो कहा जाता है। छोटा शिवमो ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है, जो ज्यादा पारंपरिक होता है और बड़ा शिवमो, शहरी क्षेत्रों में आयोजित होता है और इसमें बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक झांकियां और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। ग्रामीण शिवमो में ज्यादा पारंपरिक और धार्मिक तत्व शामिल होते हैं, जबकि शहरी शिवमो में पर्यटन और बहु-सांस्कृतिकता का प्रदर्शन अधिक होता है, क्योंकि शहरी शिवमो में बड़े पैमाने पर यहां आने वाले पर्यटक भी हिस्सा लेते हैं।

सांस्कृतिक-संरक्षण का माध्यम

शिवमो उत्सव केवल एक पारंपरिक लोक त्योहार भर नहीं बल्कि गोवा की सांस्कृतिक धड़कन है। शिवमो के रंग, संगीत और नृत्य गोवा के लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। इसके जरिए पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को संरक्षण मिलता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहयोग की भावना बढ़ाता है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक संतुष्टि से जोड़ता है। आज के आधुनिक और वैश्विक युग में जब कई पारंपरिक उत्सव अपनी पहचान खो रहे हैं, तब शिवमो उत्सव गोवा की सांस्कृतिक निरंतरता का पर्याय बन गया है।*



आप क्यों रह जाते हैं अपने लक्ष्य से दूर

सेल्फ मोटिवेशन

शिखर चंद जैन

कई लोग प्लान बनाते हैं, लक्ष्य भी तय करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अचीव ही नहीं कर पाते। हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है- लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य वह मार्गदर्शक है, जो हमें भीड़ में खोने से बचाता है और चुनौतियों से लड़ने का साहस देता है। किसी भी महान कार्य की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से ही होती है, जो आगे चलकर एक स्पष्ट लक्ष्य का रूप ले लेता है।

सोचना पर्याप्त नहीं: 'मैं यह करना चाहता हूँ' ऐसा सोचकर लक्ष्य बनाना काफी नहीं है। स्पष्टता ही लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता की पहली शर्त है। जब आप गहराई से समझ लेते हैं कि आप कौन हैं, आप वास्तव में क्या चाहते हैं और आपको कहां पहुंचना है, तभी आप एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दस गुना अधिक व तेज उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि वह उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है।

स्वयं का करें आकलन: स्वास्थ्य, आनंद, रिश्ते और वित्तीय स्वतंत्रता, ये जीवन के चार स्तंभ हैं, जिनमें संतुलित करके आप असाधारण सफलता पा सकते हैं। जब आप इन चार क्षेत्रों में से हर एक में खुद को 1 से 10 अंक देकर ईमानदारी से आकलन करते हैं तो आपको तुरंत समझ आने लगता है कि आपके जीवन की सबसे ज्यादा समस्याएं किस क्षेत्र से जुड़ी हैं? जाहिर है, वहीं जहां आपका स्कोर कम होता है। यानी उसी बिंदु पर सबसे अधिक फोकस करने की जरूरत होती है।

अपना दृष्टिकोण तय करें: लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आपकी मानसिकता दो तरह की हो सकती है, समृद्धि का दृष्टिकोण या अभाव का दृष्टिकोण। समृद्धि का दृष्टिकोण आपको आत्मनिष्ठासी, सकारात्मक और समाधान केंद्रित बनाता है। आप दुनिया को

क्या आप अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त नहीं कर पाते? ऐसे में यह जानना बहुत जरूरी है कि किन वजहों से आप अपने लक्ष्य से दूर रह जाते हैं और किन बातों का ध्यान रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जानिए।

अवसरों से भरा मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का अच्छा समय है। आप में यह जागरूकता बनी रहती है कि दुनिया में चुनौतियां हमेशा थीं, हैं और रहेंगी। मगर आप अपनी ऊर्जा इस बात पर केंद्रित रखते हैं कि क्या बेहतर किया जा सकता है? यह सोच आपको चरनात्मक, सक्रिय और लक्ष्य उन्मुख बनाती है। वास्तव में लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि ऐसा उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है। जब इंसान की आंखों में एक स्पष्ट स्वप्न और उसे पाने का दृढ़ निश्चय होता है, तो वह साधारण से असाधारण बनने का सफर शुरू कर देता है। इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण आपको सीमित कर देता है। इसमें आप किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाते लगते हैं। इस दृष्टिकोण से कभी कुछ हासिल नहीं हो पाता है।

लक्ष्य पर शिहत से टिकें रहें: अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आप इन्हें क्यों हासिल करना चाहते हैं? अगर यह केवल सतही कारणों से या दूसरों की उम्मीद पर खरा उतरने के लिए है तो आप उसके प्रति गंभीर नहीं हो पाएंगे। इसकी बजाय स्पष्ट रूप से यह जानें कि इन लक्ष्यों का आपके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हासिल मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निश्चित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें।*

पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हासिल मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निश्चित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें।*

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निश्चित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें।*

जानकारी

अंजू जैन

आजादी के बाद, भारत में तेजी से विकसित हो रहे सरकारी औद्योगिक उपकरणों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता थी, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके लिए एक मजबूत सुरक्षाबल की जरूरत महसूस की गई। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 10 मार्च 1969 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यानी सीआईएसएफ (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्वैरिटी फोर्स) की स्थापना की गई। भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा इसका गठन किया गया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। इस सुरक्षा बल का ध्येय वाक्य है-संरक्षण और सुरक्षा।

प्रमुख कार्य

अपने नाम के मुताबिक ही सीआईएसएफ का प्रमुख आरंभिक कार्य औद्योगिक सुरक्षा ही था। सरकारी कारखानों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और बिजली संयंत्रों की सुरक्षा का जिम्मा इस बल को दिया गया। बाद में समय-समय पर इसकी जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। आगे चलकर यह अर्धसैन्यबल हवाई अड्डों, बंदरगाहों और मेट्रो की सुरक्षा कार्य भी करने लगा। इस बल के जवान देश की ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और धरोहरों जैसे-लाल किला, ताजमहल आदि की रक्षा भी करते हैं। वीआईपी सुरक्षा के तहत विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना भी इनकी जिम्मेदारी में शामिल है।

बढ़ता संख्या बल

जब 1969 में सीआईएसएफ की शुरुआत हुई थी, तब इसमें सिर्फ 2,800 जवान थे। आज यह दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा बलों में से एक है, जिसमें 2,00,000 (दो लाख) से भी ज्यादा जवान शामिल हैं।

आग बुझाने में भी माहिर

सीआईएसएफ के पास अपना एक खास 'फायर विंग' भी है। यह भारत का अकेला ऐसा सुरक्षा बल है, जिसके पास फैंकियों और उद्योगों में आग बुझाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित टीम होती है।

महिलाएं भी नहीं हैं पीछे

देश के अन्य सुरक्षा बलों पुलिस, पीएसबी, बीएसएफ और सशस्त्र सैन्य (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) बलों की तरह ही सीआईएसएफ में भी महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान में इस अर्धसैन्य बल में लगभग साढ़े बारह हजार यानी आठ प्रतिशत महिलाएं तैनात हैं। सरकार का लक्ष्य जल्द ही इनकी संख्या बढ़ाकर दस प्रतिशत करने का है। मुख्य तौर पर महिलाएं एचएलए सुरक्षा, टिकट रिजर्वेशन टीम और सीआईएसएफ कमांडो टीम में शामिल होकर अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसी भी अन्य सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्स की तुलना में सीआईएसएफ में सबसे अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

आगामी 10 मार्च को सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। देश की महत्वपूर्ण धरोहरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के योगदान और भूमिका पर एक नजर।

धरोहरों-औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रक्षक सीआईएसएफ



स्मार्ट डॉग स्ववाद

सीआईएसएफ के पास बहुत ही स्मार्ट डॉग्स की तेजतर्र स्क्वाड भी है। इनके डॉग्स इतने टूट होते हैं कि वे छिपी हुई खतरनाक चीजों का पलक झपकते ही पता लगा लेते हैं। कई बार सीआईएसएफ के डॉग स्ववाद ने शांति किस्म की साजिशों का भंडाफोड़ किया है।

एयरपोर्ट सुरक्षा में संलग्न

देश के तमाम एयरपोर्ट्स पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को उनकी विशिष्ट विशेषज्ञता, उन्नत तकनीक के कारण तैनात किया गया है। वे हवाई अड्डों की सुरक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जो यात्रियों की तलाशी, सामान की स्क्रीनिंग और आतंकवाद विरोधी अभियानों में उच्च दक्षता



प्रदान करते हैं। इन सैनिकों को विशेष रूप से नागरिक हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जो सामान्य पुलिस या दूसरे अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण से अलग होती है। सन् 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद, भारत सरकार ने सुरक्षा मजबूत करने के लिए हवाई अड्डों की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत फरवरी 2000 में जयपुर हवाई अड्डे से की गई। ये अर्धसैनिक, आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके यात्रियों की गहन तलाशी और हैंड बैगेज की जांच सुनिश्चित करते हैं, जो एयरपोर्ट सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ये अंतरराष्ट्रीय विमानन सुरक्षा मानदंडों का पालन करते हैं, जो अन्य सुरक्षा बलों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। साथ ही इस बल के जवान संभावित खतरों के लिए 24x7 निगरानी करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम होते हैं। ये एयरपोर्ट के संवेदनशील क्षेत्रों में असाधारण तत्वों को पकड़ने और किसी भी प्रकार की तस्करी को रोकने में भी माहिर होते हैं। वर्तमान में 70 से अधिक एयरपोर्ट्स पर सीआईएसएफ के जवानों की तैनाती है। यद्यपि अब देश के लगभग 60 हवाई अड्डों पर गैर-प्रमुख इयूटी के लिए निजी सुरक्षा गार्ड्स भी लगाए जा रहे हैं, लेकिन प्रमुख सुरक्षा और स्क्रीनिंग का काम अभी भी मुख्य रूप से सीआईएसएफ ही करती है।*

सिने ट्रेड

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में स्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिन दिनों सिनेमा की शुरुआत हो रही थी, उसमें महिलाओं का काम करना अपेक्षाकृत रूप से प्रतिबंधित माना जाता था। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग भर पड़े पर नजर आया करते थे। लेकिन कुछ समय बाद पढ़े पर नायिकाओं के पर्दापण से अब तक स्त्री कलाकार, सिनेमा का सबसे अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। फिल्मों में समय-समय पर नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष और उनके सशक्तिकरण जैसे विषयों को गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता रहा है।

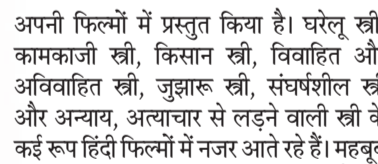
बेमेल विवाह की समस्या: हिंदी सिनेमा में वी. शांताराम, नारी समस्याओं को पढ़े पर सशक्त तरीके से उठाने वाले फिल्मकार थे। उनकी 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या पर केंद्रित थी। यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आटे ने नायिका नारी की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को भोग्या, चरणों की दासी और वस्तु मानने वाली को यह फिल्म प्रभावी सबक सिखाती है।

जातिगत विषंगतियों पर कटाक्ष: 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अच्छे कन्या' सवर्ण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुःखी फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते-जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत युवती और सवर्ण युवक के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आजादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इस फिल्म के एक दृश्य में रवींद्रनाथ ठाकुर जगत नाटक 'चांडालिका' का मंचन किया जाता है। इस नाटक में भगवान बुद्ध अछूत स्त्री के हाथों से पानी पीते हैं और सभी जातियों को समानता को व्याख्यायित करते हैं। राजकपूर और मीना कुमारी की खवाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' की कहानी भी ऐसे ही विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी क्रम में श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर', 'भुवन शोम', 'मृगया', 'भूमिका', 'मंडी', 'चक्र' आदि में हाशिए पर धकेल दी गई स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की दर्दमय झांकी प्रस्तुत की गई हैं।

दिखे स्त्री संघर्ष के विविध रूप: हिंदी फिल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को

स्त्रियों के संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों का विषय बनाया जाता रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर हम आपको कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें स्त्री संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को प्रमुखता से उगारा गया है।

फिल्मों में खूब दिखीं महिला संघर्ष-शक्ति की कहानियां

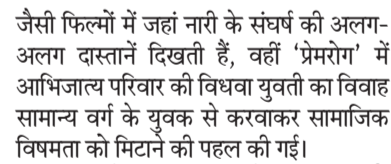


जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

बी.आर. चोपड़ा की फिल्मों में स्त्री संघर्ष: फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बी.आर. चोपड़ा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1956 में उन्होंने फिल्म 'एक ही रास्ता' में विधवा विवाह कारवाकर सामाजिक सुधार का संदेश दिया। 'साधना' (1958) समाज में वेश्याओं की स्थिति और उसके प्रति सामाजिक नजरिए पर प्रकाश डालने में सफल रही। साल 1959 में उन्होंने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जुड़ने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया। 'इंसाफ का तराजू' (1980) में बलात्कार से पीड़ित लड़की की कहानी को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। 1982 में फिल्म 'निकाह' में उन्होंने तलाक और हलाला जैसे विषयों को खूब का प्रयास किया। नारी संघर्ष की दस्तान सुनाती कुछ और फिल्मों: बॉलीवुड में स्त्रियों के संघर्ष और



नारी सशक्तिकरण पर तमाम बेहतरीन फिल्में बनी हैं। 'खून भरी मांग', 'मृत्युदंड', 'वारिस', 'थपड़', 'कहानी', 'लापता लेडीज', 'गंगुबाई काठियावाड़ी', 'नीजा', 'क्वीन', 'खुब गंग', 'इंग्लिश-बिंग्लिश', 'पिंक', 'दाला', 'छापाक', 'मर्दानी', 'गुंजन सक्सेना' जैसी कितनी ही फिल्में हैं, जो स्त्री संघर्ष, स्त्री सशक्तिकरण सहित जो जीवन के विविध पहलुओं को छूती हैं।*



जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

बी.आर. चोपड़ा की फिल्मों में स्त्री संघर्ष: फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बी.आर. चोपड़ा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1956 में उन्होंने फिल्म 'एक ही रास्ता' में विधवा विवाह कारवाकर सामाजिक सुधार का संदेश दिया। 'साधना' (1958) समाज में वेश्याओं की स्थिति और उसके प्रति सामाजिक नजरिए पर प्रकाश डालने में सफल रही। साल 1959 में उन्होंने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जुड़ने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया। 'इंसाफ का तराजू' (1980) में बलात्कार से पीड़ित लड़की की कहानी को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। 1982 में फिल्म 'निकाह' में उन्होंने तलाक और हलाला जैसे विषयों को खूब का प्रयास किया। नारी संघर्ष की दस्तान सुनाती कुछ और फिल्मों: बॉलीवुड में स्त्रियों के संघर्ष और



नारी सशक्तिकरण पर तमाम बेहतरीन फिल्में बनी हैं। 'खून भरी मांग', 'मृत्युदंड', 'वारिस', 'थपड़', 'कहानी', 'लापता लेडीज', 'गंगुबाई काठियावाड़ी', 'नीजा', 'क्वीन', 'खुब गंग', 'इंग्लिश-बिंग्लिश', 'पिंक', 'दाला', 'छापाक', 'मर्दानी', 'गुंजन सक्सेना' जैसी कितनी ही फिल्में हैं, जो स्त्री संघर्ष, स्त्री सशक्तिकरण सहित जो जीवन के विविध पहलुओं को छूती हैं।*